हमने महिला दिवस मनाया

सुहास कुमार

महिला दिवस हमेशा मिली-जुली भावनाओं के साथ आता है। हमारे दिलों में हर्ष, उल्लास, उत्साह के साथ पीड़ा, क्रोध और उत्तेजना के मिलेजुले भाव शामिल रहते हैं। हर्ष, उल्लास और उत्साह इसलिए कि हम बहनें एक साथ जुड़ती हैं। अपनी समस्याओं पर गौर करती हैं। मिलकर सवालों और मुद्दों को उठाती हैं। पीड़ा, क्रोध, उत्तेजना इसलिए कि हम फिर से कड़वे अनुभवों को दोहराती हैं। मांगें रखने, प्रतिरोध करने और मुद्दों को उठाने के बावजूद लगता है कि हम वहीं के वहीं खड़े हैं।

इसमें आशा की किरण एक ही है। हमारी लड़ाई में धीरे-धीरे और बहनें जुड़ती जा रही हैं। कुछ संवेदनशील पुरुष भी जुड़े हैं।

8 मार्च '91 को दिल्ली में हम लगभग 1500 बहनें जुटीं। इसमें 20 महिला समूहों ने भाग लिया। छह सप्ताह पहले से हमने तैयारी शुरू कर दी थी। ग्यारह बजे के करीब बहनों ने दिल्ली गेट के पास पार्क में इकट्ठा होना शुरू किया। बहुत से प्लेकार्ड व बैनर मांगों और मुद्दों को लेकर बनाए।

बारह बजे के लगभग जब काफी महिलाएं इकट्ठी हो गईं तो हमारा जुलूस लाल किले की ओर चला। गीत गाते, नारे लगाते हम सब उत्साह और जोश के साथ एक बजे के लगभग वहां इकट्ठा हुए। एक-दो भाषण हुए, लेकिन ज़्यादा जोर गीतों और नाटकों पर रहा। सबला संघ की बहनों ने नाटक "कौन है इसका जिम्मेदार" प्रस्तुत किया। अल्लारिपु तथा कुछ अन्य समूहों ने बलात्कार, युद्ध और दंगों आदि से महिलाओं के जीवन पर असर को लेकर नाटक दिखाए। अपने संदेश और मांगों को लेकर हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी में छपा एक पर्चा बांटा गया। पर्चे के कुछ अंश थे—

सांप्रदायिकता और रूढ़िवाद का बड़ा करीबी रिश्ता है। यह मिलकर हमें सदियों पीछे ढकेल देते हैं। सांप्रदायिक फूट पैदा होते ही अपनी अलग-अलग पहचान कायम करने पर जोर दिया जाता है। उसी अलग पहचान के तहत औरत की जिंदगी, उसके हक, उसके पहनने-ओढ़ने के ढंग के बारे में

कायदे व कानून थोपे जाते हैं। दंगों में हमारे घर लुटते हैं। बेरोजगारी बढ़ती है। मर्दों के आपसी झगड़ों की सजा बलात्कार और हिंसा के रूप में हमें भुगतनी पड़ती है।

आपसी एका

हमें मिली रपटों के आधार पर कुछ खबरें आप तक पहुंचाना चाहते हैं। धाड़ क्षेत्र महिला मंडल, जिला सहारनपुर ने अपना पर्चा कविता के रूप में निकाला। कुछ अंश—

"सुनो मेरे देश वालो सुनलो बहनों भाई
धर्म के ठेकेदार बन बैठे हैं कसाई
रहते हैं बंद कोठियों में भरी है इनकी तिजोरी
पुलिस और राजनीति की ओट में
करते सीना जोरी

धर्म के नाम पर करवाते हैं दंगा
कुर्सी के लिए बहाए गरीबों के खून की मांग
ये नहीं चाहते आपस में एका
एका होगा तो कैसे बजेगा इनका डंका

पर्दाफाश करना है इनका, करदो इन्हें बेनकाब
बहनों अब आगे आओ, करना है इन्हें
नाकामयाब
खुदा और ईश्वर बसते हैं दिल में
वही उनका मंदिर मस्जिद
मेहनत मजदूरी उसका धर्म और मजहब
वही पूजा, वही इबादत है

सखी मिलन

प्रगति ग्रामीण विकास समिति, नौबतपुर, पटना से पुष्पा बहन हमें लिखती हैं कि 8 मार्च को सखी मिलन के अंतर्गत हजारों की संख्या में ग्रामीण महिलाएं इकट्ठी हुईं। सांप्रदायिकता और जातिवाद के खिलाफ प्रदर्शनी, नाटक और झांकियां प्रस्तुत की गईं। उनकी रपट के कुछ अंश—

8 मार्च का दिन किसी बीती हुई लड़ाई की यादगार का त्यौहार नहीं है। यह दुनिया की आधी आबादी की आज भी जारी लड़ाई में अपने संकल्पों को नए सिरे से मजबूत कर लेने का दिन है।

सखी मिलन में सांप्रदायिकता, जातिवाद, निरक्षरता एवं गरीबी के खिलाफ संघर्ष से जुड़े कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

"जागरण का संदेश
हर सखी के दिल तक पहुंचाएं
उम्मीदों के मशाल जलाएं"

लड़ाई जारी है

दर्पण संस्थान, कोटरा मकरंदपुर, कानपुर देहात की रपट के कुछ अंश—

"आज देश के कुछ सिरफिरे कट्टर व दकियानूसी व्यक्ति धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता की आग को भड़काने की कोशिश कर रहे हैं। हमें भ्रमित नहीं होना है। स्वयं जगे रहना है, दूसरों को जगाना है। ताकि बुनियादी बदलाव की मांग मजबूती पकड़ सके। हमें पीछे नहीं लौटना है।"

बनवासी सेवा संस्थान, पलियां कलां, उत्तर प्रदेश से अजय कुमार चौबे और भारतीय जनकल्याण एवं प्रशिक्षण संस्थान गाजीपुर से जयशंकर प्रसाद लिखते हैं कि समूहों ने 8 मार्च को गोष्ठी की, नारे लगाए और जुलूस निकाला। अभियान एक दिन तक सीमित नहीं है। लड़ाई जारी है।

मिहिजाम, दुमका बिहार से कल्याणी मीना हमें समाचार भेजती हैं—

8 मार्च का मुख्य फोकस हिंसा एवं युद्ध का असर। इनमें भी खास सांप्रदायिकता व हिंसा का मुद्दा। महिला समूह के नारे थे—

कोख के दर्द एक समान
हिंदू हो या मुसलमान

भाई भाई कट मरे
दोनों माताएं रोती फिरें

महिला संगठन ताकत बढ़ावे
सांप्रदायिकता को दूर भगावे

एकता की ताकत

सेवा कर्मी संस्थान, गाजीपुर से प्राप्त समाचारः 8 मार्च उल्लास के साथ मनाया गया। ग्रामीण महिलाओं ने जुलूस निंकाला। लोक संस्कृति पर आधारित नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया गया। कार्यक्रम में 173 महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया।

बंबई से "युवा" संस्था की नवतेज लिखती हैं—जागेश्वरी की महिलाओं ने एक शांतता फेरी तनावग्रस्त इलाकों से निकाली। महिलाओं ने शांतता, एकता, मानवता बनाए रखने की प्रतिज्ञा ली।

"हम जागेश्वरी 'पूर्व' की महिलाएं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर धर्म, जात-पात, वर्ग और वर्ण के भेदभाव को भूलकर एक दूसरे का सहकार्य करेंगी। हम सब महिलाएं मिलकर मंहगाई, मार-धाड़, गुंडागिरी, नागरिक सुविधाएं, दहेज इत्यादि सभी सवालों का संगठन बना कर काम करेंगी।

"हमारी एकता को तोड़ने वाली ताकतों का एक होकर विरोध करने का हम संकल्प लेती हैं।"

महिला समाख्या समूह, टिहरी गढ़वाल से प्राप्त समाचार के अनुसार 8 मार्च वहां उत्साहपूर्वक मनाया गया। उन्होंने जुलूस निकाला, आम सभा की। उनकी आवाज थी—

चाहे जहां रहें हम
होगी नहीं एकता कम
मिलकर ज्योति जलाएंगे
महिला दिवस मनाएंगे
आओ बहनों एक हो जाएं
धर्म जाति के भेद मिटाएं

विरोधी स्वर

देवास, मध्य प्रदेश से वीणा सोनी हमें लिखती हैं— गत "8 मार्च विश्व महिला दिवस के रूप में मनाया गया। यह उत्सव मात्र उच्चवर्गीय और महानगरीय महिलाओं

का चोंचला बनकर रह गया है। गांवों एवं कस्बे की महिलाओं को इस विषय की जानकारी ही नहीं है। भारत जैसे विशाल देश का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि यहां सदैव कोई भी आयोजन या दिवस शहरों तक सीमित रहे। गांवों तक नहीं पहुंच पाए।

इनकी बात कुछ हद तक ठीक है। लेकिन वास्तविकता यह है कि महिला दिवस के बारे में शहर की भी बहुत कम महिलाएं जानती हैं। उसकी अहमियत, उसके मनाने का मकसद उससे भी कम। इसमें किसी को पहल तो करनी ही होगी। हम में से जो महिलाएं जागरुक हैं तथा समय निकाल सकती हैं, वहीं इस दिशा में सक्रिय काम कर सकती हैं। अभी तो हमारा अभियान शहर की बस्तियों और गांवों की ज़्यादा महिलाओं को जोड़ना है। इसे चोंचला नहीं कह सकते। धीरे-धीरे यह अभियान फैलता जा रहा है।

गांवों और तथाकथित निचले तबकों के साथ बहुत से महिला संगठन काम कर रहे हैं। संघर्ष तो अभी शुरू हुआ है। शहरी और ग्रामीण दोनों ही स्तरों पर स्त्रियों को जागरुक होने की ज़रूरत है। अपनी स्थिति बेहतर बनाने के लिए सक्रिय कोशिश की ज़रूरत है। दहेज को लेकर सताई गई स्त्रियां, घर और बाहर दोनों चाकों के बीच पिसती स्त्रियां, विधवा, अकेली छोड़ी हुई औरतें, पग-पग पर दबाई, सताई विवाहित स्त्रियां, चाहे महानगर की हों या कस्बों की हों, क्या उनकी पीड़ा गांवों की स्त्रियों से कम है।

दरअसल औरतों की समस्या वर्ग से उठकर है। निदान और रास्ते अलग- अलग हो सकते हैं। खास बात है इनकी ताकत बढ़ाना, उनका आत्मविश्वास जगाना, उनको स्वयं उनका मूल्य समझाना। दूसरे हमारी कद्र करें इसके लिए पहले ज़रूरी है हम अपनी क्षमताओं और महत्व को पहचानें। □

अबला नहीं तुम सबला हो
नारी लक्ष्मी है
नारी मां बहन है
फिर पत्नी क्यों पीड़ाग्रस्त है?

पहाड़ों से पत्थर तोड़कर
परिवार को पालती
त्याग की मूर्ति को किसने जाना?
अधिकार मिले बराबर
लेकिन कोरे कागज़ पर
होंठ हिले, आंखे मुड़ीं
ताने उछले बाहर जाने पर।

साखिका टीम
अजमेर, राजस्थान